# बच्चों को सुनने का महत्त्व

सुकीर्ति लखटकिया

प्राथमिक विद्यालय की किसी भी शिक्षिका के लिए "मैम! मैम! मैम!" की चहचहाटों को हर दिन सुनना एक आम बात है। मेरे निजी अनुभव में बच्चे आपके आस-पास तब तक उछल-कूद करते रहेंगे, शोर करते रहेंगे जब तक आप उनकी बातों को सुन नहीं लेते। उनकी बात आमतौर पर इतनी ज़रूरी नहीं होती जितनी प्रतीत होती है, जैसे कि, "मैम, क्या मैं पानी पी लूँ?" या "मैम क्या मैं टॉयलेट चली जाऊँ?" या फिर उत्साह से भरी हुई कोई बात जैसे, "मैम, आज मैं लंच में पोहा लाई हूँ!" लेकिन इस तरह की कोई भी बात इतनी अति आवश्यकता के साथ कही जाती है कि कोई यह सोच सकता है कि बच्चा कोई बहुत बड़ा राज़ बताने वाला है।

## सुनाई देने (hearing) और सुनने (listening) के बीच का अन्तर

यह बात हम आसानी से भूल सकते हैं कि सुनाई देने और सुनने के बीच अन्तर होता है। सुनाई देना पूरी तरह से हमारे शरीर की एक शारीरिक प्रतिक्रिया है। हमारे कानों की संरचना हमारे आस-पास की आवाज़ों को दर्ज़ करने के लिए हुई है। वहीं दूसरी तरफ़ सुनना एक संज्ञानात्मक प्रतिक्रिया है। दूसरे शब्दों में कहें तो किसी को सुनने का अर्थ है कि हम अपना ध्यान इस बात पर दे रहे हैं कि क्या कहा जा रहा है और कैसे कहा जा रहा है, ताकि हम बोलने वाले को जवाब दे सकें। इन अन्तर्विरोधों को ध्यान में रखते हुए बच्चों की बातें सुनाई देना और बच्चों को सुनना दो अलग-अलग बातें हैं।

स्कूल के अपने पाँच महीनों के दौरान मैं कक्षा-1 की शिक्षिका रही हूँ। और मेरी सीखी हुई चीज़ों में से एक बेहद महत्त्वपूर्ण चीज़ है बच्चों की बातों को सुनने का महत्त्व। बहुत से बच्चे, विशेष रूप से सरकारी स्कूलों के, जो निम्न-आय वाले वर्ग से आते हैं, ऐसे श्रोता को खोजने में विफल रहते हैं जो उनके विचारों, योजनाओं, कल्पनाओं, भय और चिन्ताओं को सुनने के लिए इच्छुक हो या उसके पास सुनने का समय हो। हो सकता है इन बच्चों के माता-पिता को कई घण्टों तक काम करना पड़ता हो, भाई-बहन (अगर कोई हो) या तो बहुत बड़े या बहुत छोटे हों और विस्तृत परिवार के सदस्य बहुत दूर रह रहे हों। और इसके ऊपर, एक औसत स्कूल शिक्षक के पास बच्चों की उन बातों पर ख़र्च करने के लिए कम धैर्य और ऊर्जा होती है जिसे वे बच्चों की बेमतलब बकवास मानते हैं।

इस सारी उपेक्षा के बीच फँसे बच्चे बड़ी जल्दी ऐसे किसी भी व्यक्ति की पहचान कर लेते हैं और उससे जुड़ जाते हैं, जो उनको सुनने के लिए समय निकालता है। असल में, कभी-कभी किसी वयस्क से बात करने से अधिक दिलचस्प एक बच्चे से बातचीत करना हो सकता है। ऐसा इसलिए क्योंकि उनकी अनपेक्षित प्रतिक्रियाएँ, सोचने का अपरम्परागत तरीक़ा और उनकी अब तक पक्की नहीं हुईं मान्यताएँ हमें हैरान कर सकती हैं।

## एक श्रोता के रूप में शिक्षक

स्कूल में एक शिक्षक के रूप में, बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति के लिए सही अवसर तैयार करना महत्त्वपूर्ण हो जाता है। प्राथमिक कक्षाओं के लिए एनसीईआरटी द्वारा दिया गया सीखने का एक आवर्तक परिणाम है, 'किसी घटना का विस्तार से वर्णन करने की क्षमता को विकसित करना, किसी दी गई काल्पनिक स्थिति का जवाब देने और अपने दैनिक अनुभवों को साझा करने में सक्षम होना।' सीखने के ये परिणाम छोटी उम्र से ही बच्चों में सामाजिक-भावनात्मक विकास से जुड़े होते हैं। इन सभी के लिए, एक सक्रिय श्रोता के होने की आवश्यकता है जो साझा की गई जानकारी को आत्मसात करता है और इसे संसाधित करता है और आगे की सोच को प्रोत्साहित करने के लिए रचनात्मक प्रतिक्रिया देता है। स्कूल का शिक्षक इसके लिए आदर्श व्यक्ति होता है। यह इसलिए भी मददगार होगा क्योंकि शिक्षक किसी बच्चे द्वारा कही जा रही बातों में छिपे हुए अर्थ को समझ सकता है और इन बातों के माध्यम से उसके बारे में और अधिक जान सकता है।

## जिए हुए अनुभव

एक दिन स्कूल में, जैसे ही मैंने कक्षा में प्रवेश किया, रूबी (उम्र आठ साल) मेरे पास यह बताने के लिए दौड़ती हुई आई कि पिछली रात उसे एक बिच्छू ने काट लिया था। मैं चौंक गई और मैंने उसे और बताने के लिए पूछा कि, "यह कैसे हुआ? तुम ठीक हो? तुम्हारे मम्मी-पापा ने क्या किया?" उसने कहा, "मैम, मम्मा-पापा ने तो कुछ नहीं किया, मैंने ख़ुद से बोरोप्लस लगा लिया।" यह सुनकर मुझे ख़ुशी के साथ ही राहत महसूस

हुई क्योंकि इसका मतलब यह था कि यह कोई असली बिच्छू नहीं हो सकता था।

सात साल का गणेश एक दिन असामान्य रूप से शान्त था। जब मैंने उससे पूछा तो उसने कहा, "पापा की साइकिल चोरी हो गई। हम मंगोड़ी खा रहे थे और कोई आया और साइकिल ले गया।" अगले कुछ दिन मैं उससे रोज़ पूछती कि क्या साइकिल मिल गई है और वह कहता कि नहीं, लेकिन वह कक्षा में आते और बाहर जाते समय मुस्कराते हुए मेरा अभिवादन करने लगा।

पाँच साल का हरिओम जिसे सब प्यार से डुग्गु कहते हैं, हमेशा आँखों में आँसू लिए स्कूल आया करता था और उसका पहला सवाल हमेशा यही होता था, "मैम, छुट्टी कब होगी? हमरे भईया कब आएँगे?" वह स्कूल में एकदम दुखी रहता था और इसमें कोई हैरानी नहीं थी कि उसे हर दिन स्कूल आना बेहद नापसन्द था। मुझे एहसास हुआ कि इससे उसकी सोचने और सीखने की क्षमता भी प्रभावित हो रही थी। मुझे पता चला कि हरिओम अनाथ था और कुछ हफ़्तों के अवलोकन के बाद, मुझे यह भी सन्देह हुआ कि उसे सीखने में भी कठिनाई होती है। लेकिन मैंने उसके साथ एक रिश्ता कायम करने की

**चित्र-1 :** मेरे द्वारा बनाया गया हरिओम का चित्र, उसकी स्लेट पर।

**चित्र-2 :** हरिओम द्वारा बनाया गया मेरा यानी चोटी मैम का चित्र।

नींव तैयार की जो उसकी बातें सुनने, उसके साथ दोस्ताना बातचीत करने और एक ऐसा भयमुक्त वातावरण बनाने से तैयार हुई, जिसमें कि वह अपनी भावनाएँ व्यक्त कर सके। उसने मुझे छोटी मैम का नाम भी दिया। जब उसके आँसू कम हो गए और उसकी मुस्कान अधिक दिखाई देने लगी, तो उसने सीखने की इच्छा व्यक्त करना शुरू कर दिया। मैंने उसकी स्लेट पर उसका एक चित्र (**चित्र-1**) बनाया और उस पर उसका नाम लिख दिया बदले में उसने मेरा चित्र बनाया (**चित्र-2**)। जब मैंने उससे पूछा, "अच्छा, ये मैं हूँ क्या? मेरे बाल कहाँ हैं? और मेरे हाथ और पैर?" उसने तुरन्त अपनी ड्राइंग में इन सभी विवरणों को भी जोड़ दिया।

बच्चे बेझिझक मुझे बता सकते हैं कि वे असल में क्या महसूस करते हैं। कक्षा की गतिविधियों के दौरान कुछ ऐसे मौक़े आए हैं जब बच्चों ने मुझे दो टूक कहा है कि, "मैम, यह मज़ेदार नहीं है।" भले ही यह सुनकर एक क्षण के लिए मैं निराश होती हूँ लेकिन फिर मैं सोचती हूँ कि उनकी यह स्पष्टता उनके सहज महसूस करने का एक संकेत है।

### बटरफ्लाई टूल के साथ बच्चों द्वारा कहानी कहना

मेरी कक्षा में जो सबसे उत्कृष्ट संवाद हुए हैं उनमें से एक का सम्बन्ध हमारे 'बटरफ्लाई टूल' से है। शुरुआती स्तर की गणित में, जहाँ गणना जैसी अवधारणाएँ होती हैं और संख्याओं की

मात्रात्मक समझ विकसित करनी होती है, गणितमाला के उपयोग को बढ़ावा दिया जाता है। यह ऐसी माला होती है जिसमें 10-10 मोतियों के सेट बारी-बारी से दो अलग रंगों में होते हैं। प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों के लिए, गणितमाला में आसानी से आगे-पीछे जाने के लिए सुझाए गए तरीक़ों में से एक है, एक मज़ेदार सन्दर्भ बनाना। जैसे कि गणितमाला हमारा बग़ीचा है, मोती हैं फूल और एक मुड़ा हुआ काग़ज़ का टुकड़ा हमारी तितली के रूप में काम करता है, जो हमारे बग़ीचे में घूमती है। मैंने अपनी कक्षा के लिए बहुत सारी तितलियाँ कई-कई बार बनाईं क्योंकि उन्हें छोटे बच्चे इधर-उधर कर देते थे/ खो देते थे/ फाड़ देते थे/ ले लेते थे।

एक दिन जब मैं कक्षा में पहुँची और देखा कि हमारी तितली फिर से ग़ायब है, तो मैंने कुछ ज्यादा ही बढ़-चढ़कर झुँझलाते हुए कहा, "ओहो! हमारी तितली तो बहुत दिनों से नहीं दिखी है, पता नहीं कहाँ उड़ जाती है बार-बार! क्या पता वो कहीं गिर गई हो या उसे चोट लग गई हो?" इसके बाद बच्चों ने इस तरह के जवाब दिए :

वैशाली : मैम, तितली शायद अपने गाँव गई है।

अनुज : हाँ! इसलिए इतना टाइम लग रहा है वापस आने में।

रूबी : मैम, उसका घर बन रहा है।

मैं : अच्छा! ये बात है क्या? बात तो सही है, घर बनाने में टाइम तो लगता है। उसका घर ईंटों से बनता है क्या?

ऋषि : नहीं मैम, तितली फूलों में रहती है, उसका घर फूलों से बन रहा है।

मुझे यह सारी बातचीत बहुत ही दिलचस्प लगी। बच्चे ख़ुद से ही कल्पना करते हुए एक कहानी गढ़ रहे थे और एक-दूसरे की कल्पनाओं की बुनियाद पर कहानी को आगे बढ़ा रहे थे। कभी-कभी, मैं अपनी खोई हुई तितली के बारे में सच में निराशा व्यक्त करती हूँ और एक-दो बच्चे जल्दी से काग़ज़ मोड़कर उसे कुछ इस तरह की बात कहते हुए मुझे थमा देते हैं : "मैम, ये लो, हमारी तितली की बहन आ गई।" जब हम गणितमाला पर प्रश्न हल करते हैं तो मैं बच्चों को बीच-बीच में हमारे सन्दर्भ की याद दिलाती रहती हूँ। उदाहरण के लिए, अगर काग़ज़ गिर जाता है, या अगर कोई बच्चा काग़ज़ को इतना कसकर पकड़ता है कि वह फट सकता है, तो मैं उन्हें

**चित्र-3** : बटरफ्लाई टूल के साथ गणितमाला पर काम करते बच्चे।

झूठी चेतावनी में कहती हूँ, “अरे अरे! हमारी तितली बहुत नाज़ुक है, उसको ध्यान से पकड़ो।” एक दिन अनुज ने कहा, “मैम, तितली को बुखार है, वो बहुत गरम हो रही है।”

हरिओम के साथ, कहानी में इस निरन्तरता ने काम किया है। वह संख्या-पूर्व अवधारणा के चरण में है और मनमाने ढंग से गिनते समय एक साथ कई मोतियों को खिसका देता है। मैंने उसे कहा, “हरिओम, तितली अभी बहुत छोटी है, वो इतने सारे फूल एक साथ नहीं खा सकती है, सिर्फ़ एक-एक मोती खिसकाओ नहीं तो उसके गले में अटक जाएगा!” उसने मुझे पूरे ध्यान से देखा और मेरी बात समझ गया। उसने कुछ देर के लिए इस बात का पालन किया यानी एक बार में एक ही मोती खिसकाता रहा। फिर अचानक ही वह पहले की तरह ही बहुत सारे मोतियों को एक साथ खिसकाने लगा और बहुत उत्साहित होकर बोला, “मैम, तितली को भूख लगी है! वो खा लेगी!”

## तार्किक सोच की ओर एक शुरुआती प्रयास

बच्चों को सुनने से हम समृद्ध संवादों की ओर बढ़ते है जिसमें सीखना दोनों तरफ़ से होता है। मेरे कुछ अनुभवों में, मैंने सीखा है कि जितना हम सोचते है बच्चे उससे कहीं अधिक जानते हैं। एक दिन हम कक्षा में हिन्दी अक्षर ‘र’ के लिए एक वर्ड वेब (शब्दों का जाल) बना रहे थे और उसमें मैंने एक जगह ‘र से रुपए’ लिखा था। वेब पूरा बनाने के बाद मैंने अल्तमश (उम्र सात साल) को यह देखने के लिए आगे आने को कहा कि वह अक्षर र से क्या पहचान पाता है। उसने ‘र से रुपए’ पढ़ा। उसके बाद जो बातचीत हुई वह आगे दी गई है। अभय (उम्र छह साल) भी पास में खड़ा होकर हमें सुन रहा था।

अल्तमश : मैम, डॉलर भी होता है।

मैं : क्या होता है ये डॉलर?

अल्तमश : मैम, पापा ने बताया कि एक डॉलर हज़ार रुपए का होता है।

मैं : और ये डॉलर कहाँ चलता है?

अल्तमश : दिल्ली और मुम्बई!

मैं : अल्तमश, मेरे ख़्याल से ये अमरीका में चलता है, आपने ये नाम पहले सुना है? कहाँ है अमरीका?

अभय : मैम, अमरीका नहीं, अमेरिका होता है!

स्कूल में शिक्षक द्वारा बच्चों को सक्रिय रूप से सुनना एक ऐसी सम्भावना प्रदान करता है जो बच्चों की चिन्तन प्रक्रिया को इस तरह से प्रभावित कर सकती है, जो शायद स्कूली

**चित्र-4 :** अल्तमश ब्लैकबोर्ड के सामने खड़ा है जिस पर अक्षर र के लिए एक वर्ड वेब बना हुआ है। बाईं तरफ़ सबसे ऊपर ‘रुपए’ लिखा हुआ दिख रहा है।

शिक्षा के पारम्परिक साधन, जैसे पाठ्यपुस्तक नहीं कर सकते। अमूर्त गणितीय प्रश्नों की तुलना में रोज़मर्रा के सन्दर्भों के बारे में बातचीत के माध्यम से बच्चों को तार्किक सोच की तरफ़ प्रेरित करना आसान है। पर सबसे बड़ी बात है कि, बच्चों को सुनना उन्हें यह दिखाता है कि आप उनकी परवाह करते हैं, पूरे तन-मन से उनके लिए उपस्थित हैं और उनको इतना सम्मान देते हैं कि उनके लिए अपना समय व ऊर्जा दे सकते हैं। आख़िरकार, एक वयस्क जब दूसरे वयस्क को ध्यान से सुनता है तो वह सम्मान की भावना को ही सूचित करता है। बच्चे भी उतने ही सम्मान के अधिकारी हैं जितना कोई और। इससे बच्चों में सुरक्षा और अपनेपन की भावना भी बढ़ती है जिससे उनके भीतर ख़ुशहाली की भावना और बढ़ने में मदद मिलती है, जो उनके सीखने को बेहतर बनाती है और इससे स्कूली शिक्षा जीवन के कौशल सीखने की जगह बन जाती है।

* बच्चों की पहचान सुरक्षित रखने के लिए नाम बदल दिए गए हैं।

**सुकीर्ति लखटकिया** अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन, सागर, मध्य प्रदेश में एसोसिएट हैं। उन्होंने शिव नाडार विश्वविद्यालय, दिल्ली-एनसीआर से अँग्रेज़ी साहित्य में मास्टर्स की पढ़ाई पूरी की है। उन्हें पढ़ना, फ़िल्में देखना, लिखना और पक्षियों को देखना रोचक लगता है। उनसे *sukriti.lakhtakia@azimpremjifoundation.org* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

**अनुवाद :** सुनन्दा दुबे **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय

आनन्दमय माहौल बनाने के लिए शिक्षक विद्यार्थियों के साथ मज़ेदार गतिविधियों जैसे नृत्य (डांस), एक्शन प्ले में शामिल होते हैं। हम विद्यार्थियों से गले लगकर, हाई-फाईव्स देकर या अभिवादन के किसी ऐसे तरीक़े से मिलते हैं जो उन्होंने उन्हें दिए गए विकल्पों में से चुना था। हम यह समझने की कोशिश करते हैं कि उनका दिन कैसा बीत रहा है, वे कैसा महसूस कर रहे हैं और कुछ भावनाओं को वे क्यों महसूस कर रहे हैं आदि।

***- फ़रज़ाना बेगम, सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा को केन्द्र में रखना, पेज 37***